कृष्ण-अंश : राखी बैद के नये चित्र

--मनमोहन सरल

बहुआयामी व्यक्तित्व रहा है श्रीकृष्ण का । उसमें भी उनके जीवन के दो पक्ष प्रमुख रहे हैं । एक पक्ष है प्रेम को समर्पित किशोर कृष्ण का और दूसरा उनके कर्म को प्रधानता देने वाले द्वारिका के राजाधिराज कृष्ण का । इसीलिए उन्हें प्रेमयोगी और कर्मयोगी, दोनों कहा जाता है । पहले स्वरूप के अन्तर्गत उनकी समस्त लीलाएं और राधा के प्रति उनका अगाध प्रेम और गोपियों के संग सम्पन्न की गई रासलीलाएं आती हैं । दूसरा है द्वारिका के अधिपति राजनयिक का रूप, जिसमें वे महाभारत के आरम्भ के समय मोहग्रस्त अर्जुन को गीता का विश्वविख्यात नि:संगता का उपदेश देते हैं ।

उनके ललित-मधुर स्वरूप के प्रति ही तो दीवानी होती हैं बृषभानुनंदिनी राधा, जो उनके प्रेम में स्वयं कृष्णमय हो जाती हैं । परम सौंदर्य और माधुर्य के आगार हैं श्रीकृष्ण और उनकी लावण्यमयी विमुग्धा सखी के रूप में हैं किशोरी राधा । राधा और कृष्ण ही प्रकृति और पुरुष हैं, जो चराचर में विद्यमान हैं ।

युवा चित्रकार राखी बैद एक लम्बे समय से अपने चित्रों के माध्यम से इन्हीं अलौकिक प्रेमी-युगल को मूर्त्तिमान करती रही हैं । यद्यपि वे तेरापंथी जैन हैं और अवतार तथा सगुण भक्ति पर उनकी सहज आस्था नहीं है, किन्तु उनका मानना है कि आज के इस कठिन समय में प्रेम और समर्पण द्वारा ही जग को एक सूत्र में बांधा जा सकता है । स्वशिक्षित राखी बैद को चित्रांकन का कौशल जैसे वरदान स्वरूप मिला है, जिसका उपयोग वे अपने मन के भावों के प्रस्फुटन के लिए करती रही हैं । उन्हें सदैव यही लगता रहा है कि केवल मात्र चित्रांकन ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा वे अपने को अभिव्यक्त कर सकती हैं ।

राखी ने जब अपना काम पहली बार 2008 में प्रदर्शित किया तो कला के प्रशंसकों ने उसे हाथोहाथ लिया । तब से वे बराबर मुम्बई के कला जगत में सक्रिय हैं । उनकी नई चित्र-शृंखला इन दिनों प्रदर्शित है 'कृष्ण-अंश', जो राधा और कृष्ण की निकुंज-लीला की अलग ही व्याख्या करती है । श्रीकृष्ण जब वृंदावन से सदा के लिए द्वारिका जा रहे थे, अपनी अभिन्न सखी राधा से मिले और उनसे अनुरोध किया कि वे उनकी अर्धांगिनी बन कर द्वारिका की सम्राज्ञी बनें, किन्तु राधा के मन में तो कुंजबिहारी कृष्ण की छबि ही बसी हुई थी । उनका मन यह स्वीकार करने को उद्यत ही न था कि मोरमुकुट धारी कृष्ण राजमुकुट भी धारण कर सकते हैं । फलत: राधा यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं करती हैं और वृंदावन में ही रह जाती हैं । यमुनातट के क्रीड़ास्थलों, कदम्ब के तले बिताये प्रेम-कुंजों और अपनी चिरसखी राधा के साथ जिन अंत:प्रकोष्ठों में अनगिनत अंतरंग क्षण बिताये थे, उन्हें छोड़ कर श्रीकृष्ण द्वारिका चले जाते हैं, फिर कभी वापस न आने के लिए ।

राखी बैद ने अपनी ये नई पेंटिंग इसी घटना को केन्द्र में रख कर बनाई हैं । उनके पिछले काम से ये चित्र काफी अलग हैं । इनमें भावों की गहन सघनता उभर कर आई है । राधा-कृष्ण की अंतरंगता के साक्षी बांसुरी, मोरपंख, गायें, कदम्ब वृक्ष, यमुनातीर आदि सब इन चित्रों में अवश्य आये हैं, किन्तु संयोग-वियोग की कठिन सच्चाई को भी अभिव्यक्त करते नज़र आते हैं । इसीलिए यह नई पेंटिंग की सीरीज़ राखी बैद के अब तक के काम से अलग है और यह उनकी भावाभिव्यक्ति का एक नया आयाम प्रस्तुत करती है ।

मनमोहन सरल

कला-समीक्षक

76, पत्रकार, बान्द्रा पूर्व, मुम्बई 400 051

e-mail: mms1934@hotmail.com